Foundation ①
of
1 Jai Ram Singh
Deptt of Psychology
Mahila College Daltonganj
Dehri
Social Psychology
II Sem.
MJC

Function of Group
समूह के कार्य

समूह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक संगठन है बल्कि यों कहा जाय की समूह के मिलने से ही समाज का निर्माण होता है प्राय प्रत्येक सदस्य किसी न किसी प्रकार के समूह की सदस्यता स्वीकार करता ही है समूह अपने सदस्यों के लिए कई प्रकार की कार्य करता है। समूह के कुछ प्रमुख कार्य निम्नलिखित है

1 आवश्यकताओं की विभिन्न प्रकार से संतुष्टि

यह बात बिल्कुल दिन की उजाले की तरह स्पष्ट है कि समूह सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है इसीलिए सदस्य समूह की सदस्यता को स्वीकार करते है। समूह सदस्यों को प्राथमिक एवं गौण दोनो प्रकार की आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है। किसी भी समूह में कुछ सदस्य अन्य सदस्यों की अपेक्षा ज्यादा प्रभावशाली होते है। समूह ज्यादा प्रभुत्वशाली एवं कम प्रभुत्वशाली सदस्यों की आवश्यकताओं

② ... प्रकार से करते हैं
की संतुष्टि अलग-अलग प्रकार से ... करते हैं।
... । सभी की अनेक स्वरूप
में अन्तर है लेकिन दोनों ही अपने ज्यादा प्रभाव-
शाली सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि
ज्यादा करने का प्रयास करते हैं।

② समूह के प्राथमिक एवं गौण कार्य — समूह दो प्रकार के कार्यों को करता है जिन्हें क्रमशः समूह के प्राथमिक कार्य और गौण कार्य कहते हैं। जिस कार्य को करने के लिए समूह का निर्माण किया जाता है या जिन प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समूह का निर्माण किया जाता है उसे समूह का प्राथमिक कार्य कहते हैं उदाहरण के लिए यदि कोई धार्मिक समूह धर्म के प्रचार के लिए बना है तो धर्म प्रचार इस समूह का प्राथमिक कार्य है इसी प्रकार यदि कोई समूह राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निर्मित हुआ है तो राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति उस समूह का प्राथमिक कार्य है। इस प्राथमिक कार्य के अलावा समूह यदि कोई दूसरा कार्य करता है तो यह उसका गौण कार्य कहलायेगा उदाहरण के लिए यदि कोई धार्मिक समूह शिक्षा प्रसार का कार्य करता है तो यह इसका गौण कार्य कहलाता है क्योंकि इस कार्य का

प्रत्यक्ष सम्बन्ध इस समूह के प्राथमिक उद्देश्य से नहीं है। यह देखा गया है कि जिस प्राथमिक कार्य की संतुष्टि के लिए समूह का निर्माण होता है उसकी संतुष्टि कुछ ही दिनों में कर ली जाती है बाद में यह समूह अपना प्रभाव बनाये रखने के लिए दूसरे और गौण कार्य करने लगता है। इस अवस्था में गौण कार्य ही प्रमुख हो जाता है और वह प्राथमिक कार्य को पूरी तरह से ढक लेता है। इससे स्पष्ट होता है कि समूह अपने प्राथमिक कार्य से हटकर गौण कार्य भी करता है

समय के साथ-साथ समूह अपने कार्यों में इस प्रकार का परिवर्तन क्यों करता है इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि जिस प्राथमिक आवश्यकता की संतुष्टि के लिए समूह का निर्माण होता है उसकी संतुष्टि कुछ ही दिनों में हो जाती है अतः समूह के प्रति सदस्यों का लगाव बनाये रखने के लिए समय के साथ-साथ समूह नयी आवश्यकताओं की रचना करता है यह भी कहा जाता है कि समय के साथ-साथ सदस्यों की आवश्यकताओं में बदलती रहती है अतः समूह भी अपनी आवश्यकताओं में उसी के अनुरूप परिवर्तन करता है इस तरह समूह में इन गौण आवश्यकताओं का भी विशेष

(4) (5) (4)

महत्व है

(3) प्रभुत्व एवं लगाव आवश्यकता की संतुष्टि →
समूह सदस्यों की मुख्य रूप से दो प्रकार की आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है। यह कुछ सदस्यों के प्रभुत्व की आवश्यकता की संतुष्टि करता है साथ ही यह अधिकांश सदस्यों के लगाव की आवश्यकता की भी संतुष्टि करता है यदि किसी समूह में स्पष्ट रूप से नेता का स्थान निश्चित नहीं हो तब भी समूह में कुछ ऐसे सदस्य अवश्य होते है जो समूह के कार्यों में ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाते है समूह ऐसे सक्रिय सदस्यों की प्रभुत्व आवश्यकता की संतुष्टि करता है ऐसे प्रभुत्वशाली सदस्य अपने प्रभुत्व की आवश्यकता की संतुष्टि समूह द्वारा ही करते है

लेकिन समूह में अधिकांश सदस्य ऐसे ही होते है जो समूह के द्वारा अपने लगाव की आवश्यकता की संतुष्टि करते है अधिकांश सदस्य समूह के साथ अपना लगाव बनाये रखना चाहते है इसलिए न सिर्फ

आर्थिक आवश्यकता की संतुष्टि होती है बल्कि उसे सुरक्षा भी मिलती है किसी भी श्रमिक का सदस्य होने पर ही आर्थिक आवश्यकताओं की संतुष्टि हो जाती ही है साथ ही साथ श्रमिक संघ के साथ रहने के कारण उसे सुरक्षा का भी अनुभव होता है। समूह ऐसे सामान्य सदस्यों के लगाव की आवश्यकता की संतुष्टि करता है। लगाव की यह आवश्यकता एक प्रकार की गौण आवश्यकता है और प्रायः सभी समूह अपने सदस्यों की इस आवश्यकता की संतुष्टि करते हैं।

(4) नयी आवश्यकताओं की रचना → इस बात का उल्लेख ऊपर में किया गया है कि प्राथमिक आवश्यकता की संतुष्टि समूह जल्दी ही कर देता है अतः सदस्यों को समूह के साथ लगाव बनाये रखने के लिए नयी-नयी आवश्यकताओं की रचना भी समूह करता है सदस्य भी समूह के साथ आत्मीयता को स्थापित कर लेते हैं वे भी चाहते हैं कि समूह उनके समय तक बना

रहे। इसलिए यदि समूह की प्राकृतिक आवश्यकता ही संतुष्टि हो जाती है तो वह नयी आवश्यकताओं संतुष्टि करता है। संतुष्टि हो जाने के बाद वह फिर नयी आवश्यकता की संतुष्टि करता है इस प्रकार नयी आवश्यकताओं की रचना का क्रम चलता रहता है। जितना ही नया समूह भविष्य में रह सकता है उतनी ही अधिक आवश्यकताओं की रचना करता है ताकि सदस्यों की विभिन्न आवश्यकताओं की संतुष्टि हो सके। नयी आवश्यकताओं की रचना करने से समूह में शक्ति में वृद्धि होती है नयी आवश्यकताओं की रचना करने से समूह के सदस्यों में समूह के साथ लगे रहने जिज्ञासा भी बनी रहती है, समूह के इस कार्य के पीछे यह सिद्धांत कार्य करता है कि समूह अपने सदस्यों की जितनी ही अधिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है वह उतने ही लम्बे समय तक बना रहता है और उतना ही अधिक मजबूत होता है।

इस प्रकार समूह अपने सदस्यों के विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है समूह के कुछ मुख्य कार्य हैं जिनका वर्णन ऊपर की पंक्तियों में किया गया है।

—x—